NCERT SOLUTIONS

CLASS - 8TH



aglasem.com

Class : 8

Subject : सामाजिक विज्ञान

Chapter : 3

Chapter Name : ग्रामीण क्षेत्र में शासन चलाना

Q1 निम्नलिखित के जोड़े बनाएँ

रैयत - ग्राम-समूह

महाल - किसान

निज - रैयतों की ज़मीन पर खेती

रैयती - बागान मालिकों की अपनी ज़मीन पर खेती

Answer.

रैयत - किसान

महाल - ग्राम-समूह

निज - बागान मालिकों की अपनी ज़मीन पर खेती

रैयती - रैयतों की ज़मीन पर खेती

Page : 37 , Block Name : फिर से याद करें

Q2 रिक्त स्थान भरें :

(क) यूरोप में वोड उत्पादकों को _____ से अपनी आमदनी में गिरावट का खतरा दिखाई देता था।

(ख) अठारहवी सदी के आखिर में ब्रिटेन में नील की माँग_____ के कारण बढ़ने लगी।

(ग) _____की खोज से नील की अंतराष्ट्रीय माँग पर बुरा असर पड़ा।

(घ) चंपारण आंदोलन _____के ख़िलाफ़ था।

Answer.

(क) नील

(ख) औद्यगिकीकरण

(ग) कृत्रिम रंग

(घ) नील बागानों

Page : 37 , Block Name : फिर से याद करें

Q3 स्थाई बंदोबस्त के मुख्य पहलुओं का वर्णन कीजिये।

Answer.ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1793 में अपने राजस्वो को बढ़ने के लिए स्थाई बंदोबस्त को लागू किया।

aglasem.com

इस बंदोबस्त के हिसाब से राजाओं और तालुकदारों को ज़मींदारों के रूप में मान्यता दी गयी। उन्हें किसानों से लगान वसूलने और कंपनी के राजस्व चुकाने का ज़िम्मा सौंपा गया।उनकी और से चुकाई जाने वाली राशि को स्थाई रूप से तय कर दिया गया। इसका मतलब ये की भविष्य में कभी भी कंपनी के द्वारा राशि में इज़ाफा नहीं किया जाना था। लेकिन अगर कोई जमींदार राजस्व चुकाने में विफल हो जाता था तो उसकी ज़मींदारी को छीन लिया जाता था।अंग्रेज़ों को लगता था की क्योंकि राज्य की राजस्व मांग बढ़ने वाली नहीं थी इसलिए जमींदार समय के साथ बढ़ते उत्पादन से फायदे में रहेंगे। दूसरी तरफ, गाँव में किसानों को यह व्यवस्था दमनकारी मालूम होती थी।

Page : 38 , Block Name : आइए विचार करें

Q4 महालवारी व्यवस्था स्थाई बंदोबस्त के मुकाबले कैसे अलग थी?
Answer. बंगाल प्रेसीडेंसी के उत्तर-पश्चिम प्रांतों (वर्तमान में उत्तर प्रदेश और बिहार के क्षेत्र) के लिए होल्ट मकेंज़ी नामक अंग्रेज़ ने एक नयी व्यवस्था तैयार की गयी जिसे महालवारी व्यवस्था कहा गया। मैकेंज़ी को लगता था की उत्तर भारत समाज में गाँव एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था जिसे बचाकर रखना चाहिए और इस व्यवस्था के अंतर्गत गाँव को ही लगान वसूल करने का अधिकार दिया गया।स्थाई बंदोबस्त में कर एवं लगान वसूल करने का अधिकार ज़मींदारों के हाथों में था वहीं महालवारी व्यवस्था में यह ज़िम्मेदारी गाँव के मुखिया को सौंप दी गयी। स्थाई बंदोबस्त में जैसा की नाम से ही प्रतीत होता है राजस्व स्थाई था अर्थात इस कर राशि को कभी नही बढ़ाया जा सकता था लेकिन महालवारी व्यवस्था में लगान राशि को समय समय पर संशोधित किया जाता था।

Page : 38 , Block Name : आइए विचार करें

Q5 राजस्व निर्धारण की नयी मुनरो व्यवस्था के कारण पैदा हुई दो समस्याएँ बताइए।
Answer. ब्रिटिश नियंत्रण वाले दक्षिण भारतीय इलाकों में भी स्थाई बंदोबस्त की जगह नयी व्यवस्था को शुरू किया गया जिसे रैयातवार(मुनरो व्यवस्था) कहा गया।
इस व्यवस्था को लागू करने वाले मुनरो को लगता था की दक्षिण में परंपरागत जमींदार नहीं थे। इसलिए उनका तर्क था कि उन्हें सीधा किसानों से ही बंदोबस्त करना चाहिए। लेकिन इस व्यवस्था में काफी समस्याएं थी-
→ राजस्व अधिकारियों ने आमदनी को बढ़ाने के लिए राजस्व कुछ ज्यादा ही निर्धारित कर दिया गया था जिसे किसान चुका नहीं पा रहे थे और वे गाँवों से भागने लगे जिससे राजस्व वसूली भी सुस्त पड़ने लगी थी।
→ मुनरो को उम्मीद थी की यहाँ व्यवस्था किसानों को संपन्न और खुशहाल बना देगी लेकिन किसान राजस्व चुकाने की विवशता के कारण माहजनों से क़र्ज़ लिए जा रहा था और उसमे फंसता जा रहा था । किसानों के ऊपर ऋण का बोझ बढ़ने से वे किसानी छोड़ने लगे।

Page : 38 , Block Name : आइए विचार करें

Q6 रैयत नील की खेती से क्यों कतरा रहे थे?

Answer.रैयत नील की खेती करने से निम्न कारणों से कतरा रहे थे-

→ रैयतों को बागान मालिकों द्वारा समझौता करने के लिए बाध्य करना जिससे उन्हें कम ब्याज दरों पर नकद कर्ज मिल जाता था लेकिन उन्हें बागान मालिकों द्वारा कम कीमत पर नील बेचने पर मजबूर किया जाता था जिससे रैयत अपना ऋण नहीं चुका पाते थे और अगली फसल के लिए दोबारा अग्रिम ऋण मिल जाता था और ये चक्र निरंतर चलता था जिससे किसानों की दुर्दशा होने लगी।

→ बागान मालिक चाहते थे की किसान अपने सबसे उपजाऊ खेतों में ही नील की खेती करें लेकिन नील के साथ एक परेशानी थी कि उसकी जड़ें बहुत गहरी होती थीं और वहां पर नील।की खेती के बाद धान की खेती नहीं करी जा सकती थी।

→ सबसे बड़ी समस्या थी की नील की कटाई का वक़्त और धान की कटाई का वक़्त एक ही होता था जिससे किसानों को नील की कटाई के लिए ही मज़दूर उपलब्ध हो पाते थे।

Page : 38 , Block Name : आइए विचार करें

Q7 किन परिस्थितियों में बंगाल में नील का उत्पादन धराशायी हो गया?

Answer. → 1859 में हज़ारों किसानों ने नील की खेती से इनकार कर दिया और बागान मालिकों का लगान चुकाने से इनकार कर दिया और नील की फ़ैक्टरियों पर हमला करने लगे।

→ अंग्रेज़ों ने 1857 की बगावत जैसे हालात से बचने के लिए उन्होंने रैयतों की तरफ झुकना सही समझा और कहा कि रैयतों को नील के अनुबंध मानने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता । इससे किसानों को लगा की अंग्रेज़ों ने नील की खेती न करने का हुक्म सुना दिया है।

→ नील उत्पादन व्यवस्था की जांच के लिए एक आयोग बनाया गया। इस आयोग ने बागान मालिकों को दोषी माना और उनकी आलोचना की गयी। आयोग ने कहा की नील की खेती रैयतों के लिए फायदे का सौदा नहीं है इसलिए किसान अनुबंध को पूरा करके नील की खेती बंद कर सकता है।

Page : 38 , Block Name : आइए विचार करें